International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

1956 से 2005 के बीच भोपाल जिले में दलित धर्मान्तरण आंदोलन: एक ऐतिहासिक दस्तावेजी अध्ययन

कल्पना जांभुलकर
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. ममता चंसोरिया
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

सारांश
यह शोध आलेख 1956 से 2005 की अवधि के दौरान मध्य प्रदेश के भोपाल जिले में हुए दलित धर्मान्तरण आंदोलन का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक ऐतिहासिक स्रोतों—सरकारी दस्तावेज़ों, समकालीन समाचार पत्रों, भोपाल घोषणापत्र (2002), डॉ. आंबेडकर के लेखन, तथा अभिलेखीय सामग्री—पर आधारित है। आलेख तर्क प्रस्तुत करता है कि भोपाल में धर्मान्तरण केवल एक धार्मिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह जाति व्यवस्था के विरुद्ध एक सुविचारित राजनीतिक-सामाजिक आंदोलन था, जिसकी जड़ें डॉ. आंबेडकर की 1956 की दीक्षा और 2002 के भोपाल घोषणापत्र की माँगों में निहित थीं। अध्ययन में पाया गया कि इस अवधि में भोपाल में सामूहिक धर्मान्तरण की तीन प्रमुख लहरें आईं, जिनमें 1987-1990, 1997-1998 तथा 2001-2002 के वर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहे। इन आंदोलनों ने न केवल दलितों की सामाजिक पहचान को पुनर्परिभाषित किया, बल्कि मध्य प्रदेश सरकार को दलित कल्याण हेतु ऐतिहासिक नीतियाँ बनाने के लिए भी बाध्य किया।

मूल शब्द: धर्मान्तरण, दलित इतिहास, भोपाल घोषणापत्र, आंबेडकर, सामाजिक न्याय, मध्य प्रदेश

1. परिचय

भारतीय इतिहास में धर्मान्तरण केवल धार्मिक विश्वास का परिवर्तन नहीं रहा है, वरन् यह सामाजिक मुक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम भी रहा है। विशेषकर, दलित समाज के लिए, धर्मान्तरण ने सदियों से थोपी गई अस्पृश्यता एवं कलंकित पहचान से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया। 14 अक्टूबर 1956 को डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा नागपुर में दीक्षा लेने के साथ ही एक नए ऐतिहासिक युग का सूत्रपात हुआ। इसके बाद देशभर में, विशेषकर महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में, लाखों दलितों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया।

प्रस्तुत शोध आलेख मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल को केन्द्र में रखते हुए, 1956 से 2005 के बीच के धर्मान्तरण आंदोलन का ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण करता है। भोपाल

का यह आंदोलन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्ष 2002 में यहाँ भोपाल घोषणापत्र (Bhopal Declaration) जारी किया गया, जिसने दलित अधिकारों की दिशा में एक नई बहस छेड़ी। यह अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है: भोपाल में धर्मान्तरण की शुरुआत कब और किन परिस्थितियों में हुई? यह आंदोलन किन चरणों से गुज़रा? भोपाल घोषणापत्र का इस आंदोलन से क्या संबंध था? तथा इस ऐतिहासिक प्रक्रिया ने दलित समाज की पहचान को किस प्रकार प्रभावित किया?

2. ऐतिहासिक स्रोत एवं पद्धति

यह अध्ययन ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। इसमें निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है:

2.1 प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोतों में मध्य प्रदेश सरकार के राजस्व एवं समाज कल्याण विभाग के अभिलेख शामिल हैं, विशेषकर भूमि आवंटन से संबंधित वर्ष 1998 और 2001 के सरकारी आदेश। भोपाल घोषणापत्र (2002) का मूल पाठ इस अध्ययन का केन्द्रीय दस्तावेज़ है। समकालीन समाचार पत्रों में वर्ष 1956 से 2005 के दौरान *दैनिक भास्कर*, *नई दुनिया*, एवं *द टाइम्स ऑफ इंडिया* (भोपाल संस्करण) में प्रकाशित रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है। डॉ. आंबेडकर के मौलिक लेखन, विशेषकर *द अनटचेबल्स* (1948) एवं *बुद्ध एंड हिज धम्म* (1957) का भी अध्ययन किया गया है।

2.2 द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोतों में क्रिस्टोफ़ जैफ्रेलोट (2005), सुधा पई (2013), एवं एस.एन. चौधरी (2007) जैसे विद्वानों की शोध पुस्तकें शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली* एवं *कंटेम्परी वॉइस ऑफ दलित* जैसी शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों का भी उपयोग किया गया है।

2.3 पद्धति

स्रोतों की प्रामाणिकता की जाँच (हेटोंजेन-प्रूफ़िंग) के पश्चात, उनकी व्याख्या एवं संश्लेषण करके एक कालानुक्रमिक एवं विषयगत ऐतिहासिक विवरण तैयार किया गया है। घटनाओं के क्रम एवं उनके सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ को समझने के लिए ऐतिहासिक विश्लेषण की मानक पद्धतियों का पालन किया गया है।

3. भोपाल में धर्मान्तरण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ. आंबेडकर की 1956 की दीक्षा का प्रभाव भोपाल में भी तत्काल देखने को मिला। सन् 1957 के आसपास भोपाल के जाटव एवं चमार समुदाय के कुछ लोगों ने व्यक्तिगत रूप

से बौद्ध धर्म अपनाना शुरू किया (जैफ्रेलोट, 2005)। किंतु सामूहिक धर्मान्तरण की शुरुआत 1970 के दशक के अंत में हुई, जब दलित पैंथर आंदोलन का प्रभाव मध्य प्रदेश तक पहुँचा।

तत्कालीन समाचार पत्रों की रिपोर्टों के अनुसार, भोपाल में सामूहिक धर्मान्तरण की तीन प्रमुख लहरें आईं:

3.1 प्रथम लहर (1987-1990)

यह लहर हरिजन सेना एवं बौद्ध समाज के संयुक्त प्रयासों से शुरू हुई। दिसंबर 1987 में भोपाल के बैरागढ़ क्षेत्र में पहला सामूहिक धर्मान्तरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 500 परिवारों ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया ("बैरागढ़ में," 1987)।

3.2 द्वितीय लहर (1997-1998)

यह लहर सरकारी नीतियों से असंतोष एवं सामाजिक भेदभाव की घटनाओं की प्रतिक्रिया में आई। इस दौरान भोपाल के ग्रामीण क्षेत्रों—बैरसिया, बिलखिरिया, फंदा—में हजारों लोगों ने धर्मान्तरण किया (पई, 2013)।

3.3 तृतीय लहर (2001-2002)

यह लहर सबसे महत्वपूर्ण थी क्योंकि यह भोपाल घोषणापत्र की तैयारी एवं उसके तत्काल बाद की अवधि में हुई। जनवरी 2002 में आयोजित ऐतिहासिक सम्मेलन के बाद, भोपाल एवं आसपास के क्षेत्रों में बड़ी संख्या में दलितों ने बौद्ध धर्म अपनाया ("दलित सम्मेलन," 2002)।

4. भोपाल घोषणापत्र (2002): एक ऐतिहासिक दस्तावेज़

12-13 जनवरी 2002 को भोपाल में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय दलित सम्मेलन में भोपाल घोषणापत्र (द भोपाल डॉक्यूमेंट) जारी किया गया। यह केवल एक दस्तावेज़ नहीं था, वरन् यह दलित मुक्ति की एक व्यापक रणनीति थी (मध्य प्रदेश सरकार, 2002)। इसके प्रमुख ऐतिहासिक बिंदु निम्नलिखित थे:

4.1 भूमि अधिकार

घोषणापत्र के तहत 1998 एवं 2001 के सरकारी आदेशों का हवाला देते हुए, 2,42,810 हेक्टेयर (6 लाख एकड़) अतिरिक्त भूमि को दलितों में वितरित करने की माँग की गई। उल्लेखनीय है कि 1998 के आदेश से पहले ही 62,320 हेक्टेयर (1.54 लाख एकड़) भूमि का वितरण किया जा चुका था (चौधरी, 2007)।

4.2 शिक्षा में विविधीकरण

दस्तावेज़ में दलित बच्चों को आईआईटी, आईआईएम एवं मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश हेतु

विशेष कोचिंग की व्यवस्था करने की मांग की गई। साथ ही, स्कूली पाठ्यक्रम में डॉ. आंबेडकर के विचारों एवं दलित इतिहास को शामिल करने की सिफारिश की गई।

4.3 आर्थिक भागीदारी

घोषणापत्र में दलित उद्यमियों को सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में ठेके देने एवं बैंक ऋण की उपलब्धता सुनिश्चित करने की मांग की गई। यह पहली बार था जब किसी सरकारी दस्तावेज़ में दलितों की आर्थिक भागीदारी को इतने स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया। *फ्रंटलाइन* पत्रिका (फरवरी 2002) ने इस घोषणापत्र को "दलित आंदोलन के इतिहास में एक नया अध्याय" करार दिया। इस सम्मेलन ने स्पष्ट कर दिया कि दलित समाज अब केवल आरक्षण तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि आर्थिक सत्ता में भी हिस्सेदारी चाहता है ("द दलित कॉज़," 2002)।

5. धर्मान्तरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन

ऐतिहासिक स्रोत बताते हैं कि धर्मान्तरण ने दलित समाज की सांस्कृतिक पहचान को मौलिक रूप से बदल दिया। पारंपरिक हिंदू त्योहारों के स्थान पर बुद्ध पूर्णिमा, धम्म चक्र प्रवर्तन दिवस (दीक्षा दिवस) एवं डॉ. आंबेडकर जयंती ने लेना शुरू कर दिया। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों का परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह एक नई, गौरवपूर्ण सांस्कृतिक पहचान के निर्माण की प्रक्रिया थी (जैफ्रेलोट, 2005)।

समकालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, धर्मान्तरण के बाद दलितों में आत्म-सम्मान की भावना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और वे सार्वजनिक जीवन में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने लगे। 2002 के बाद, भोपाल में कई दलित बहुल क्षेत्रों में बौद्ध विहारों का निर्माण शुरू हुआ, जो सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रतीक बन गए।

6. निष्कर्ष

1956 से 2005 की अवधि में भोपाल में दलित धर्मान्तरण का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि यह आंदोलन केवल धार्मिक परिवर्तन का नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक-राजनीतिक मुक्ति का आंदोलन था। डॉ. आंबेडकर के विचारों से प्रेरित इस आंदोलन ने दलितों को एक नई पहचान, आत्म-सम्मान एवं सामाजिक न्याय की दिशा में संघर्ष का एक मंच प्रदान किया। भोपाल घोषणापत्र (2002) इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया की परिणति थी, जिसने दलित मुक्ति के आर्थिक एवं राजनीतिक आयामों को रेखांकित किया।

यह अध्ययन बताता है कि इतिहास लेखन में केवल शासकों और युद्धों का ही नहीं, वरन् ऐसे सामाजिक आंदोलनों का भी उतना ही महत्व है, जिन्होंने आम जनमानस के जीवन को मौलिक रूप से परिवर्तित किया। भोपाल का यह आंदोलन न केवल मध्य प्रदेश के

इतिहास में, बल्कि समूचे भारतीय सामाजिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज किए जाने योग्य है।

संदर्भ

1. Ambedkar, B. R. (1948). *The untouchables: Who were they and why they became untouchables?* Amrit Book Company.
2. Ambedkar, B. R. (1957). *The Buddha and his Dhamma*. Siddharth College Publication.
3. बैरागढ़ में 500 परिवारों ने लिया बौद्ध धर्म. (1987, दिसंबर 15). *दैनिक भास्कर*, भोपाल संस्करण, पृ. 3.
4. Chaudhary, S. N. (Ed.). (2007). *Dalit agenda and grazing land to SCs & STs*. Concept Publishing Company.
5. दलित सम्मेलन में हजारों ने लिया बौद्ध धर्म. (2002, जनवरी 14). *नई दुनिया*, भोपाल संस्करण, पृ. 1, 5.
6. The Dalit cause. (2002, February 2). *Frontline, 19*(3). https://frontline.thehindu.com/
7. Government of Madhya Pradesh. (2002). *The Bhopal document: Charting a new course for Dalits for the 21st century* [Conference document]. Government of Madhya Pradesh.
8. Jaffrelot, C. (2005). *Dr. Ambedkar and untouchability: Fighting the Indian caste system*. Columbia University Press.
9. Pai, S. (2013). *Developmental state and the Dalit question in Madhya Pradesh: Congress response*. Routledge.
10. दस हज़ार दलितों ने बौद्ध धर्म अपनाया. (1998, अप्रैल 22). *दैनिक भास्कर*, भोपाल संस्करण, पृ. 5.
11. Times News Network. (2002, January 14). Bhopal Declaration issued. *The Times of India*, Bhopal Edition, p. 1.